Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 6, May-2019, ISSN 2230-7540

अमृता प्रीतम के हिंदी उपन्यासों का एक अध्ययन

Rajesh Kumar*

VPO-Barsana, Tehsil-Pubdri, District-Kaithal, Haryana

सार – *अमृता प्रीतम का जन्म 31 अगस्त 1919 में अविभाजित भारत, (विभाजन के बाद पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के गुजरावाला) मे हुआ था। माता राजबीबी और पिता नंदसाधु की पुत्री के रूप में पिता ने इस कन्या को अपना उपनाम पीयूश समर्पित किया था। 'पीयूश' के पंजाबी अर्थ के आधार पर ही इस कन्या का नाम अमृता रखा गया। अमृता कौर की माता का देहांत 31 जुलाई सन् 1930 में हो गया था, जब बालिका अमृता केवल 11 वर्ष की थी और सिक्ख-पंथ के प्रचारक के रूप में अपने पिता के साथ संगत करती थी। माता के दहेातं के बाद अमृता कौर पिता के साथ लाहौर आ गई, जहाँ विवाह पष्चात् भारत आने तक वह वहीं रही। अमृता की सगाई बाल्यकाल में ही हो गई। माता के देहांत के बाद उन्होंने अपना एकाकीपन दूर करने के लिए कम उम्र में ही लेखन-कार्य प्रारंभ किया। अमृता प्रीतम ने कविता की बारीकियाँ अपने पिता से सीखीं, जो धार्मिक-गाथाओ के रूप में थीं उनकी पहली कविता-संकलन 'अमृतालहर' का प्रकाशन 1936 मे हुआ, जब वह केवल 16 वर्ष की थी, यहीं से अमृता की रचना-यात्रा प्रारंभ हुई। 1936 से 1943 के मध्य इनकी कई कविताएँ प्रकाशित हुईं। उनका विवाह प्रीतम सिंह से होने के बाद उनका नाम अमृता प्रीतम पड़ा।*

----------X----------

प्रस्तावना

व्यक्तित्व - अमृता प्रीतम का जन्म 31 अगस्त 1919 में अविभाजित भारत, (विभाजन के बाद पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के गुजरांवाला) में हुआ था। माता राजबीबी और पिता नंदसाधु की पुत्री के रूप में पिता ने इस कन्या को अपना उपनाम पीयूष समर्पित किया था। 'पीयूश' के पंजाबी अर्थ के आधार पर ही इस कन्या का नाम अमृता रखा गया।

अमृता कौर की माता का देहांत 31 जुलाई सन् 1930 में हो गया था, जब बालिका अमृता केवल 11 वर्ष की थी और सिक्ख-पंथ के प्रचारक के रूप् में अपने पिता के साथ संगत करती थी। माता के देहांत के बाद अमृता कौर पिता के साथ लाहौर आ गई, जहाँ विवाह पष्चात् भारत आने तक वह वहीं रही। अमृता की सगाई बाल्यकाल में ही हो गई। माता के देहांत के बाद उन्होंने अपना एकाकीपन दूर करने के लिए कम उम्र में ही लेखन-कार्य प्रारंभ किया। अमृता प्रीतम ने कविता की बारीकियाँ अपने पिता से सीखीं, जो धार्मिक-गाथाओं के रूप में थीं। उनकी पहली कविता-संकलन 'अमृतालहर' का प्रकाशन 1936 में हुआ, जब वह केवल 16 वर्ष की थी, यहीं से अमृता की रचना-यात्रा प्रारंभ हुई। 1936 से 1943 के मध्य इनकी कई कविताएँ प्रकाशित हुईं। उनका विवाह प्रीतम सिंह से होने के बाद उनका नाम अमृता प्रीतम पड़ा।

अमृता प्रीतम पंजाब की सबसे लोकप्रिय महिला-लेखिका के रूप में अपनी पहचान बनाई है। वे पंजाबी भाषा की पहली कवियत्री थीं। 1960 में पति से तलाक होने पर उन्होंने साहित्य-सृजन को चुना। अमृता प्रीतम ने अपनी रचनाओं में अपने पति का कहीं भी उल्लेख नहीं किया। वे उन्हें 'सहयात्री' या 'अब साथ नहीं रहा जा सकेगा' जैसे शब्दों से संबोधित किया। अमृता ने इस विवाह-विच्छेद के दर्द को चुपचाप सह लिया, इस विच्छेद के लिए न तो उन्होंने अपने पति से कोई विवाद किया न उन्हें प्रताड़ित किया और न ही उनसे कभी अप्रसन्नता जाहिर की। अमृता ने अपने विवाह-विच्छेद को कभी नहीं छुपाया, अपितु 1994 में अपने जीवनी के रूप में लिखित पुस्तक 'रसीदी टिकट' में उल्लेख भी किया है। अमृता प्रीतम के विवाह-विच्छेद के समय उनके दो बच्चे, बड़ी लड़की जिसका जन्म 23 अप्रैल 1946 में और बेटा जिनका जन्म जुलाई 1947 में हुआ था उनके साथ रहे।

1960 का वर्ष अमृता प्रीतम के जीवन में सबसे दुख भरा वर्ष रहा। उन्होंने लिखा है कि उनका मन काफी उद्वेलित था और वह समझ नहीं पा रहीं थीं कि वे किस राह को चुने। 'इमरोज' जिनके साथ अमृता प्रीतम अपने देहावसान दिवस तक साथ रहीं, वह अमृता से 6 वर्ष छोटे थे। अमृता प्रीतम के कई शौक थे, पहला फोटो ग्राफी, नृत्य जिसे उन्होंने तारा चैधरी से सीखा था। उन्हें सितार बजाने का भी शौक था, उनके गुरु थे

www.ignited.in

मास्टर रामरखा, सिराज अहमद और दीना सितारिया।उन्होंने टेनिस खेलना भी सीखा था, परंतु उनके सभी शौक देश-विभाजन के दर्द में गुम होकर रह गए। अमृता ने आल इंडिया रेडियो, देहरादून में बारह वर्षों तक प्रतिदिन रु. 5/- के मानदेय पर कार्य किया। इसके संबंध में उन्होंने लिखा - मैं बीमार पड़ना सह नहीं सकती थी। इन सबके बीच अमृता प्रीतम ने अपना लेखन कार्य जारी रखा 'दर्द' उनके जीवन का एक अहम हिस्सा बन चुका था।

उपन्यासकार

वतन, कहानियों के आंगन में, अदालत, धरती सागर और सीपियां, नागमणी, देख कबीरा, दीवारों के साये में, खामोशी के आँचल में, एक थी अनिता, प्रसन्न लीला, जेब कतरे, कच्ची सड़क, मनमिर्ज़ातन साहिबा, हरे धागे का रिश्ता, अक्षरों की रासलीला, वर्जितब़ाग की कथा, पिंजर, मैं तुम्हें फिर मिलूँगी, किसी तारीख को। अमृता प्रीतम के उपन्यास 'पिंजर' पर 2009 में फ़िल्म का निर्माण किया गया है। इस फ़िल्म में उनके मूल उपन्यास पिंजर की पटकथा से कोई भेद-भाव नहीं किया गया। यह फ़िल्म कथानक के अनुरूप हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बँटवारे पर फिल्मायी गयी। जिसमें एक हिंदू नारी के दर्द और पतिव्रता चरित्र का स्पष्ट चित्रण था। 1975 में कादम्बरी नामक फ़िल्म उनके उपन्यास 'धरती सागर और सीपियां' के कथानक पर आधारित थी। इसी तरह उनकी एक कहानी 'उनाह की कहानी' पर 'डाकू' नाम की फ़िल्म का निर्माण 1976 में किया गया। अमृता प्रीतम के उपन्यास और कहानियों पर बनी फ़िल्म ने उनकी रचनाओं की लोकप्रियता को और कहानियाँ जो कहानियाँ नही कच्चे रेशम सीलड़ की दीवारों के साये में दो खिड़कियाँ लाल मिर्च सात सौ बीस कदम अमृता प्रीतम की कविताएँ, उपन्यासों, कहानियों में उनके व्यक्तित्व, उनका खुलापन, उनकी संवेदन शील झलक दिखाई देती है, अमृता प्रीतम की कविताएँ जहाँ नारी पीड़ा को उजागर करती हैं, उनके सौंदर्य-बोध को भी दर्शाती है। उनकी रचनाएँ उनकी बेबाक शैली के लिए हमेषा पसंद की जाती रहेंगी।

अमृता प्रीतम

अमृता प्रीतम साहित्य जगत् में ,केसी 'शख्सियत रही हैं जिनके लेखनी ने भाषाओं की सीमाओं को तोड़ा और यह प्रमाणित किया कि लेखक की 'शैली भाषा, बोली और देश की जद में बँधी नहीं रहती। साहित्य में उनके द्वारा सृजित रचनाओं ने सभी वर्ग के पाठ कों को आकर्षित किया, उनकी लेखन- 'शैली पाठकों के कोमल मन पर सीधा प्रभाव छोड़ती है। अमृता प्रीतम साहित्य-में बहुचर्चित नाम है। उनका बचपन और प्रारंभिक जीवन भले ही अमृता प्रीतम साहित्य जगत् में ,केसी 'शख्सियत रही हैं जिनके लेखनी ने भाषाओं की सीमाओं को तोड़ा और यह प्रमाणित किया कि लेखक की 'शैलीभाषा, बोली और देश की जद में बँधी नहीं रहती। साहित्य में उनके द्वारा सृजित रचनाओं के पाठकों को आकर्षित किया, उनकी लेखन-'शैली पाठकों के कोमल मन पर सीधा प्रभाव छोड़ती है। अमृता प्रीतम साहित्य-में, बहुचर्चित नाम है। उनका बचपन और प्रारंभिक जीवन भले ही अमृता प्रीतम ने साहित्य लेखन में शृंगार रस की कविताओं से पदार्पण किया। अमृता की विराट प्रतिभा का दर्शन उनके साठ वर्षों तक साहित्य की सेवा और सौ से अधिक पुस्तकों, कहानियों, कविताओं में होता है। अमृता प्रीतम की लेखनी, उपन्यास, कहानी, कविताओं में समान रूप से दखल रखती थी। उनकी लेखन-'शैली ने उनके हर कृतिको अमर कर दिया। अमृता प्रीतम की हिंदी भाषा में, उनके स्वयं के द्वारा रूपांतरित 28 उपन्यास, 15 कथा-संग्रह और 23 कविता संकलित हैं। अमृता प्रीतम के उपन्यास, कहानियाँ और कविताओं के न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी लाखों पाठक रहे हैं, हिंदी पाठकों का बड़ा समूह अमृता प्रीतम के उपन्यासों को अमृता प्रीतम की कविता, जिसमे दे' के बँटवारे का दर्द मुखर हुआ है। वह मूल रूप से पंजाबी भाषा में रची गई थी।

शोध महत्व -

भारत विभाजन के पूर्व एवं बाद की स्थितियों और बाद के परिवर्तनों का अमृता प्रीतम के साहित्य पर प्रभाव व्यक्ति समाज एवं राष्ट्र के जीवन में परिवर्तन हर युग में अवश्यंभावी है तथा उन जीवन मूल्यों, व्यक्ति चरित्र, सभ्यता व संस्कृति का मेरूदण्ड भी यह परिवर्तन है। स्वतंत्रता के साथ ही देश में बहुमुखी परिवर्तन हैं जिन्होंने भारतीय चेतना को उग्रता से आंदोलित किया। स्वतंत्रता का सूर्य विभाजन की रक्तिम आभा लेकर उदित हुआ और यह विभाजन की त्रासदी भारतीय इतिहास का वह काला अध्याय, हैं जिसमें उस भीषण रक्तपात की कथा अमृता प्रीतम के पिंजर, डॉ-देव, नीना, उनके हस्ताक्षर आदि उपन्यासों में भी हम इस त्रासदी का मर्मस्पर्शी चित्रों को देख सकते हैं। अमृता प्रीतम ने देश विभाजन की त्रासदी को न केवल देखा या सुना है बल्कि इस त्रासदी का सबसे अधिक प्रभाव नारी पर ही पड़ा। नारी के लिए आजादी की रोशनी जीवन अंधकार बन कर आई। इसी का अमृता जी के साहित्य में नारी वेदना की छाया दिखाई देती है। देश विभाजन की अमानवीय घटना उनके प्रायः सभी उपन्यासों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई देती है। विभाजन के दंगों का सबसे अधिक प्रभाव पंजाब प्रांत पर अधिक रहा जो इतिहास की वेदना भी है और चेतना भी

www.ignited.in

उनके उपन्यास विभाजन की त्रासदी का यथार्थांकन है। सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आंतरिक पीड़ा के यथार्थ को उजागर करता है। युग चेतना के साथ जीवनानुभूतियों की सच्चाई अमृता जी के लेखन का वो मापदण्ड है जो मानव को केवल मानव माने। विभाजन के दौरान सांप्रदायिकता की बिल चृजनदों दो अमर रचनाओं, वारिसशाह से (कविता) पिंजर उपन्यास का सृजन किया। अमृता प्रीतम ने नारी जीवन की प्रसद स्थितियों के बयान में पूर्णतः सफल रही है। अपने पात्रों के साथ वे स्वयं अंतरता से जुड़ी हैं। जो भारत विभाजन की पूर्व एवं बाद की स्थिति का यथार्थ समावेश है।

अमृता का अकेलापन:

अमृता की साहित्य सृजन में सब से सशक्त प्रेरणा उसके स्वयं के अकेलेपन ने उसे दी। बचपन से ही वो अकेली रही। उसकी माँ का देहांत उस समय हो गया था, जब वह ग्यारह बरस की थी। उनके परिवार में पिता के अलावा कोई नही था। उम्र के कोमल पड़ाव जैसे-जैसे पार करती उसे अपने दुःख-सुख बांटने वाले दोस्त की कमी महसूस हुई। अमृता स्वयं अपने बार में लिखती हैं कि उनका अस्तित्व किसी न किसी रूप में हमेशा मेरे साथ रहा है- कभी मनुष्य के रूप में कभी कलम की सूरत में और कभी ईश्वर की जात की तरह एक से अनेक होते हुऐ और इसी अकेले पन को उनकी कलम ने अमृता के अकेलापन को दुर किया और जिन्दगी भर साथ रहा।

अमृता की उम्र के साथ अमृता के कोमल मन में कौंपलें सबसे पहले तब फूटने लगी, जब वह सोलह साल की थी। अपने मनोभवों को व्यक्त करने के लिए लालायित इस पंजाबी लेखिका ने लिखना प्रारंभ कर दिया। उन्हीं के शब्दों में-मेरा सोलहवां वर्ष भी अवश्य ही ईश्वर की साजिश रहा हो क्योंकि इसने मेरे बचपन की समाधि तोड़ दी थी। मैं कविताएँ लिखती और हर कविता मुझे वर्जित इच्छा की तरह लगती थी। किसी ऋषि की समाधि टूट जाए तो भटकने का शाप उसके पीछे पड़ जाता है-सोचों का शाप मेरे पीछे पड़ गया। यूँ तो अमृता के अपने समकालीन कवियों, लेखकों से बड़े अहसास अनुभव रहे थे लेकिन पाक दिल इंसान सज्जाद हैंदर से जब उनका परिचय हुआ तो दोस्ती लफ्ज आंखों से झिलमिलाने लगे।

सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा -

शैली विज्ञान भाषा की संदर्भग्त भेदक विशेषताओं अथवा विविधताओं का व्यवस्थित अध्ययन है। इस परिभाषा के अनुसार शैली विज्ञान में मौखिक अथवा लिखित भाषा-प्रयोग की उन सभी विशेषताओं का अध्ययन समाविष्ट हो जाता है, जिन्हें एक मातृभाषी सहज रूप में संदर्भ (वक्ता, श्रोता, विषय, स्थान, समय, प्रयोजन, सामाजिक स्तर आदि) भेद से अभिज्ञापित करने में समर्थ होता है। इस प्रकार याकोब्सन के अनुसार शैली विज्ञान में न केवल साहित्य की भाषा का अध्ययन होता है, अपितु साहित्येतर प्रयोजनों से प्रयुक्त भाषा का भी अध्ययन होता है। (श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ-2017)

भोलानाथ तिवारी - "शैली विज्ञान प्रयोगिक भाषा विज्ञान के अंतर्गत आता है। इसमें साहित्यिक भाषा के सर्जनात्मक प्रयोगों का भाषा वैज्ञानिक विश्लेषण किया जाता है। वस्तुतः शैली की सत्ता वहीं होती है जहाँ भाषा का रागत्मक तथा व्यंजक प्रयोग हो, साप्रयोग्जो सामान्य भाषा में सुलभ नहीं है। इन्हीं प्रयोगें का अध्ययन-विश्लेषण शैली विज्ञान का विषय है। भाषा विज्ञान पर आधृत होने के कारण अपनी मूल प्रकृति में शैली विज्ञान, साहित्यिक शैली का भाषिक विश्लेषण तो है, किंतु वह भाषा विज्ञांन से इस बात में भिन्न है कि भाषा विज्ञान का विश्लेषण प्रायः सामान्य भाषा होती है, जबकि शैली विज्ञान का विश्लेष्य साहित्यिक भाषा होती है।" (शैली विज्ञान, 2016)

रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के अनुसार – "शैली विज्ञान साहित्य को समझने-समझाने की एक दृष्टि है, जो "शैली' के साय पर एक ओर साहित्यिक कृति की संरचना (स्ट्रक्चर) और ग्ठन (टेक्सचर) पर प्रकाशन डालती है और दूसरी ओर कृति का विश्लेषण करते हुए उस में अंतर्निहित 'साहित्यिकता' का उद्घाटन करती है। (रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, संरचनात्मक 'शैलीविज्ञान, दिल्ली: आलेख, प्रकाशन प्रथम संस्करण, 2016) शैली के प्रतिमान का चयन पाठ की प्रकृति, विश्लेषक का अपना ज्ञान, उसकी मत और शक्ति सीमा, इन सब के आधार पर किया जाना चाहिए। साहित्य स्वयं में एक अनुशासन है और साहितयकार वास्तविक अर्थ में स्वतंत्र होता है, उच्छृंखल नहीं अर्थात् वह स्व (अपने में तंत्र (नियम) से बँधा होता है और यह तंत्र है। अपनी रचना में उद्भूत संसार की यथार्थता और सच्चाई से पाठक को विश्वस्त कराना, कल्पित को भी वास्तविक के रूप में पेश करना। अर्थात् व्यक्ति अपने विचारों को जो व्यवस्था और गति प्रदान करता है, उसी को शैली कहते हैं। शैली का संबंध एक ओर वक्ता/लेखक के कथ्य की अभिव्यक्ति से है, तो दूसरी ओर श्रोता/पाठक के लिए उस का संप्रेषणीय होना भी महत्वपूर्ण है। अतः शैली विज्ञान का लय भाषा-प्रयोग के माध्यम से संप्रेषणीयता की खोज करने से संबंधित हो जाता है, जिसमें न केवल अर्थ विज्ञान अपितु संकेत विज्ञान का समावेश अनिवार्यतः होता है। (कर, चित्तरंजन-2015)

www.ignited.in

चयन का अर्थ है 'चुनना' अर्थात् एकाधिक में किसी एक को चुन लेना। शैली विज्ञान के प्रसंग इसका अर्थ होगा किसी भाषा में प्राप्त एकाधिक इकाइयों या व्यवस्थाओं में अपनी अभिव्यक्ति के लिए 'किसी एक को चुन लेना' चयन है। (तिवारी, भोलानाथ-2014 अभिव्यक्ति के प्रसंग तथा उद्देश्य के अनुरूप उपलब्ध भाषा गत विकल्पों में से उपयुक्त का चयन-भाषा का विशिष्ट प्रयोग है। रचनाकार अपनी कृति को विशिष्ट स्वर देने के लिए अपनी अनुभूति को व्यक्त करने के लिए, अनेक स्तरों पर भाषिक रूपों का चयन करता है, जिसमें भाषा गतपर्याय समूहों में से उपयुक्त का चयन, शब्दों के नवीन प्रयोग, नए शब्दों का निर्माण वाक्य चयन आदि। याकोब्सन के मतानुसार चयन में समतुल्यता, पर्यायमूलकता, विलोमार्थकता, सादृश्यता आदि का समागम रहता है। (गोस्वामी, कृष्ण कुमार-2015)

समानान्तरता से आशय है, किसी रचना में समान या विरोधी भाषिक इकाइयों का समांतर प्रयोग। (तिवारी, भोलानाथ-2015) समांतरता अनिवार्यतः, और समता या विरोधिता में स्पष्ट तौर पर प्रकट होती है, तो दूसरी ओर वहाँ, जहाँ वह, से दूसरी स्थिति में परिवर्तित होती दिखती है अथवा अर्ध-सुरों के अनुक्रम में उपस्थित होती है। लय में आरों के निश्चित अनुक्रम के आवर्तन के बतौर और तुकान्तता अथवा अन्त्यानु प्रासंगिकता में भी आवर्तन की शक्ति शब्दों और विचारों के माध्यम से वाक्य में प्रयुक्त होता है।

चयन की प्रक्रिया जहाँ सहचार क्रमिकता के आपर क्रियाशील होती है, वहाँ उनके कई सहजातीय एकाकों में केवल एक विकल्प चयन के फलस्वरूप होता है। इसके ठीक विपरीत, संयोजन की प्रक्रिया विन्यास क्रमिकता के आपर काम करती है, वहाँ वह कई भाषिक, को-दूसरे की सन्निधि में आनुक्रमिकता से जोड़ती चलती है। ध्वनि स्तर पर चयन और समांतरता की अनेकशः संभावनाँ है। विशेष स्वर और व्यंजन ध्वनियों का चयन ही समांतरता के उदाहरण के लिए चयन हो सकता है, जैसे-उदाहरण के लिए निराला की पंक्ति- 'बहुत दिनों बाद खुला आसमान तले' कवि ने यहाँ दी स्वर 'आ' का विशिष्ट चयन लयात्मक की दृष्टि से किया है। यह ध्वनि यदि 'बाद' में आई है तो 'खुला' में भी आई है और 'आसमान' में भी। आसमान में इस का प्रयोग आसमान की व्यापकता, फैलाव और विराटता को हमारी आँखों के सामने सहज रूप में मूर्त कर देता है। यहाँ 'आ' ध्वनि ही जैसे यह बता देती है कि 'आसमान' यहाँ से वहाँ तक खुला है। इस प्रकार ध्वनि स्तरीय समांतरता चयन का भी उदाहरण है। (पांडे, 'शीतांशु', 2015)

ध्वनि चयन स्वतंत्र रूप से नहीं, शब्दों के माध्यम से होता है। कुछ शब्दे ऐसे होते हैं, जिनमें निहित ध्वनियाँ अभीष्ट अर्थ को भी ध्वनित कर देती हैं, जिनमें ध्वन्यात्मक या अनुकरणात्मक शब्दों (कल-कल, झर-झर, चट-चट, पट-पट) के अलावा अर्थ बिंबों को व्यक्त करने वाले ध्वनि-समुच्चयों से निर्मित शब्द भी आते हैं, जैसे- 'व्योम' में ऊँचाई का भाव है, तो 'गगन' में नाद का, तथा 'आकाश' में विशालता का। (तिवारी, 2014, 81) रचनाकार केवल लयात्मकता के लिए ध्वनि चयन नहीं करता, बल्कि इससे शब्द के अर्थ अधिक सम्प्रेषणीय होते हैं। अर्थात कोमलता-परुषता भावगत, तरलता, कठोरता, संदर्भगत स्पष्टता-जटिलता के साथ-साथ ध्वनि विशेष से शब्द रस, गंध, स्पर्श एवं रूप का भी द्योतन होता है, जिससे संप्रेषण जीवंत एवं रोचक हो जाता है। गद्य में ध्वनि चयन कम ही मिलता है। अमृता प्रीतम ने अपने उपन्यास 'पिंजर' में ध्वनि चयन अधिक किया है और 'धरती सागर और सीपियों' में ध्वनि-चयन कम हुआ है।

अमृता प्रीतम ने अपने 'धरती, सागर और सीपियां' और 'पिंजर' उपन्यासों में प्रोक्ति का उपयोग किया है। बहुधा लेखिका इन प्रोक्तियों के प्रयोग से वाक्य के अर्थ को और अधिक स्पष्ट करने में सफल रही है। अमृता प्रीतम द्वारा प्रयोग में ली, प्रोक्ति के कारण कथानक पठन में सहज और जीवंत प्रतीत होते हैं। बहुधा रचना कारों द्वारा कथानक के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए प्रोक्तियों का प्रयोग किया जाता है, लेकिन प्रोक्ति के माध्यम से जब रचना अपनी सहजता के साथ प्रभाव पूर्ण हो जाये तो उसे रचनाकार की शैली के रूप में देखा जाना चाहिए। अमृता प्रीतम ने अपनी रचना में वाक्यों का संयोजन भी पूरी सहजता और सरलता से किया है, जो उनके परिपक्व लेखन और पाठक की रुचि की समझ को दर्शाता है और यही अमृता प्रीतम की लेखन-शैली की विशेषता है। (गोस्वामी, कृष्ण कुमार- 2014, 209)

'शर्मा, कृषणकुमार (2014) की "शैली विज्ञान की रूपरेखा' 'शीर्षक से प्रकाशित पुस्तक में 'शैली के प्राच्य एवं पाश्चात्य दोनों आयामों का लेकर अपने दृष्टि को. प्रस्तुत किया है।

सुरेश कुमार (2014) परारचित 'शैली विज्ञान में इस विषय से संबंधित कई रोचक तत्वों का उद्घाटन किया गया है। इस पुस्तक में 'शैली की न केवल भारतीय परंपरा की बात की गई है बल्कि 'शैली की अति आधुनिक परम्परा जैसे अँग्रेज़ी एवं अमेरिकी शैली विज्ञान, रूसी लेखन शैली विज्ञान, जर्मन और स्पेनी' 'शैली विज्ञान के स्रौत की बात की गई है।

वैरागी मीलाल (2014) ने आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कृतित्व का 'शैली वैज्ञानिक अध्ययन के रूप में उत्कृष्ट कार्य

www.ignited.in

किया है। इस पुस्तक में रचनाकार ने भारतीय 'शैली तत्वों के साथ पाश्चात्य शैली को भी उदधृत किया है।

गौस्वामी, कुमार (2013) 'श्में शैली विज्ञान और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भाषा प्रकाशित है। गोस्वामी ने भाषा वैज्ञानिक परिधि के भीतर रखकर शैली के विभिन्न रूपों को उद्घाटित किया है। इन्होंने साहित्यकार की भाषा का शैली विश्लेषण, ध्वनि-योजना, रूप-प्रक्रिया, वाक्य-संरचना ,एवं प्रोक्ति पर विशेष चर्चा की है।

पांडेय, शशि भूषण 'शीतांशु' की (2013) 'शैली और शैली विश्लेषण' प्रकाशित हुई। इस पुस्तक के माध्यम से शशि भूषण पांडेय 'शीतांशु' ने शैली विज्ञान से संबंधित कई भ्रांतियों का सैद्धान्तिक पद प्रस्तुत किया है। चयन, विचलन, सामांतरता के लोगों का अध्ययन समाहित है।

शोध के उद्देश्य

1. अमृता प्रीतम के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का विस्तार पूर्वक अध्ययन प्रस्तुत करना।

2. अमृता प्रीतम की कविताएँ, उपन्यासों, कहानियों में उनके व्यकितत्व, उनका खुला पन, उनकी संवेदनशीलता आदि का वर्णन प्रस्तुत करना।

3. प्रस्तुत शोध-प्रबंध में अमृता प्रीतम के उपन्यासों में (धरती सागर और सीपियां तथा पिंजर) में उसकी भाषिक संरचना का अध्ययन शैली विज्ञान के आधार पर करना तथा इसमें शैली और रचनाकार के बीच, अंतरंग संबंध को रेखांकित कर अध्ययन प्रस्तुत करना।

4. अमृता प्रीतम के उपन्यासो में मनोविज्ञान का सर्वाधिक प्रयोग और परिष्कृत और रूप दिखाई देता है। नारी-सौंदर्य की अभिव्यक्ति को भी इस अध्ययन के माध्यम से समझने का प्रयास करना तथा उसके मूल स्वरूप को भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करना।

अनुसंधान क्रियाविधि

अमृता प्रीतम: अमृता प्रीतम एवं कृषा सोबती दोनों ने ही अपने जीवन में स्वातंत्र्योत्तर युग का चित्रण बहुत ही उल्लेखनीय रूप से की थी। किसी भी उपन्यासकार के जीवनवृत्त एवं व्यक्तित्व का प्रभाव निश्चित रूप से उसके साहित्य लेखन पर पड़ता है। अतः रचनाकार की साहित्य सर्जना को समझने के लिए उसके व्यक्तित्व को भी समझना आवश्यक है। संसार में सभी कवि अथवा साहित्यकार सबसे अधिक भावुक और प्रभावी होता है। संसार की सभी छोटी बड़ी घटना साहित्य सर्जक और समाज के सामान्य स्तर के व्यक्ति दोनों को समान रूप से प्रभावित करती है। लेकिन सामान्य स्तर पर व्यक्ति जहाँ इन से प्रभावित होकर भी शांत बैठ जाता है, वहाँ साहित्य सर्जक का व्यक्तित्व एक सा होता है कि उस से प्रभावित होकर उसे लिपि बद्ध कर समाज के संमुख अभिव्यक्त कर ही दम लेता है। अभिप्राय यह है कि प्रत्येक कृतिकार की प्रत्येक कृति के सृजन के पीछे किसी ना किसी विशिष्ट कारणों का समावेश अवश्य होता है।

शोध अध्ययन का सीमांकन

मनुष्य प्रारंभ से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का रहा है। अपने को आँकने और परिवेश को पहचानने के प्रयास में वह पड़ताल की प्रक्रिया से सदैव प्रवाहमान रहा है। उसकी इसी जिज्ञासा ने शोध की व्यवस्था को जन्म दी तथा मनुष्य को इस रहस्यमय सृष्टि को समझने की दिशा में बाँध दी। (माहेश्वरी, सुरेश- 2010(21)1-6- 'पिंजर' तथा 'धरती सागर और सीपियां में मूल कथानक अमृता प्रीतम पंजाबी मूल की कवियत्री उपन्यासकार हैं। इनकी लेखनी को भारत और पाकिस्तान दोनों देशों देशवासियों ने बहुत प्यार और सम्मान दिया है। वे संवेदनशील विचारधारा की साहसी लेखिका रही हैं। इनका पूरा रचना-कार्य वृहद् मानव-मूल्यों और परस्पर प्रेम और सौहार्द की भावना को समर्पित है।

निष्कर्ष

अमृता प्रीतम द्वारा रचित उपन्यास 'पिंजर', लोकप्रिय उपन्यास है, जिसका कथानक, ओराटना क्रम जहाँ इतिहास की वेदना को प्रदर्शित करते हैं, वहीं दूसरी ओर बँटवारे से आहत मानवीय भावनाओं, वंसंबंधों की पुनरावृत्ति से बचने का संदेश भी देती है। घटना का क्रमवार विवरण, पात्रों का चरित्र और उनके संवाद ही उपन्यास या कहानी के सौंदर्य को 'पिंजर' के साथ-साथ अमृता प्रीतम के अन्य उपन्यासों मे भी नारी-चरित्र की विशेष व्याख्या की गई है, दर्द में भी अपने सतीत्व, पतित्वको महत्व देना, समाज में कभी डरना और कभी लड़ना, जैसे चरित्र को लेखिका ने विशेष रूप से चिह्न किया है। अमृता प्रीतम के उपन्यास में नारी को अबला भी दिखलाया गया है और सब लाभी, मासूम भी और चाला कभी, लेकिन उपन्यास में प्रयुक्त 'शब्दों के चयन इन चरित्रों को अस्वीकृत नहीं बनाते।

www.ignited.in

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कर, चित्तरंजन-2018, प्रारंभिक शैली विज्ञान-रायपुर: शोध वं अनुसंधान विकास केन्द्र।

2. गुरु, कामता प्रसाद- 2018, हिंदी व्याकरण-जयपुर: पंचशील प्रकाशन।

3. गोस्वामी, कृष्ण कुमार-2017, शैली विज्ञान और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की भाषा-दिल्ली: अभिव्यक्ति प्रकाशन।

4. तिवारी, भोलानाथ-2017, व्यवहारिक शैली विज्ञान-दिल्ली: शब्दकार प्रकाशन।

5. नेशनल पब्लिशिंग हाउस पाण्डेय, 2016, 'शैली और 'शैली विज्ञान-दिल्ली: वाणी प्रकाशन।

6. प्रकाश, राजीव-2013, शैली विज्ञान और पाश्चात्य एवं भारतीय साहित्य शास्त्र-जयपुर: राजस्थान अकादमी।

7. प्रसाद, वासुदेव नंदन- 2014, आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना-दिल्ली: भारती प्रकाशन।

8. बैरागी, लक्ष्मी लाल-2014, हजारी प्रसाद द्विवेदी के कृतित्व का 'शैली का वैज्ञानिक अध्ययन-जयपुर: संधी प्रकाशन।

9. मिश्र, विद्या निवास-2014, रीति विज्ञान-दिल्ली: राधा कृष्ण प्रकाशन।

10. रावत, चंद्रभान एवं सिंह, दिलीप-2014, शैली तत्व सिद्धांत और व्यवहार दिल्ली: नेशनल पब्लिशिंग हाऊस।

11. शर्मा, कर्तारचंद-2014, कालिदास और शैली विज्ञान-दिल्ली: ईस्टर्न बुक लिंकर्स।

Corresponding Author

Rajesh Kumar*

VPO-Barsana, Tehsil-Pubdri, District-Kaithal, Haryana